आपातकालकी संजीवनी : आयुर्वेद – खण्ड २

औषधीय वनस्पतियोंका रोपण कैसे करें ?

हिन्दी (Hindi)

ग्रन्थ-निर्मितिसम्बन्धी मार्गदर्शक

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

ग्रन्थके संकलनकर्ता

पू. (स्व.) वैद्य विनय नीळकंठ भावे

एवं वैद्य मेघराज माधव पराडकर

विशेष सहायता

डॉ. दिगंबर नभु मोकाट

प्राध्यापक, वनस्पतिशास्त्र विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ.

सनातन संस्था

卐 सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४३, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९६, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला २९, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

नवम्बर २०२३ तक ३६४ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९४ लाख ६७ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थ-निर्मितिसम्बन्धी मार्गदर्शक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

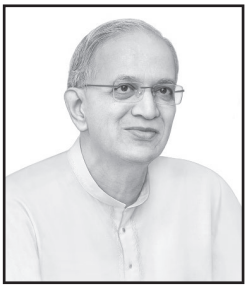

१. 'ईश्वरप्राप्ति हेतु कला' के विषयमें मार्गदर्शन एवं संगीत, नृत्य आदि कलाओं के सात्त्विक प्रस्तुतीकरण सम्बन्धी शोध

२. आचारपालनके कृत्य, धार्मिक कृत्य एवं बुद्धि-अगम्य घटनाओंका वैज्ञानिक उपकरणोंद्वारा शोध

३. शारीरिक एवं मानसिक तथा अनिष्ट शक्तियोंकी पीडाओंकी उपचार-पद्धतियोंके विषयमें शोध

४. २१.११.२०२३ तक २ बालक-सन्तोंको, तथा ६० प्रतिशतसे अधिक आध्यात्मिक स्तर प्राप्त २२९ और अन्य ९०८ दैवी बालकोंको समाजसे परिचित करवाया । दैवी बालकोंके विषयमें शोध-कार्य भी जारी है ।

५. अपनी (सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीकी) देह तथा उपयोगकी वस्तुओंमें हो रहे दैवी परिवर्तनों सम्बन्धी शोधकार्य और अपने महामृत्युयोगका शोधकार्यकी दृष्टिसे अध्ययन

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

पू. (स्व.) विनय नीळकंठ भावे (आयुर्वेद प्रवीण)

आपको पिछली ४ पीढियोंसे चिकित्साशास्त्रका ज्ञान धरोहरके रूपमें मिला । आप सनातनके ३५ वें सन्त तथा 'श्री अनंतानंद औषधालय' कारखानेके संस्थापक एवं गोवाके 'महर्षि अध्यात्म विश्वविद्यालय'में आयुर्वेदशास्त्रके शोधकर्ताके रूपमें सेवारत थे ।

वैद्य मेघराज माधव पराडकर (आयुर्वेदाचार्य)

आप संस्कृतमें भी प्रवीण हैं । आप सनातनके रामनाथी (गोवा) स्थित आश्रममें आयुर्वेदीय चिकित्सककी एवं ग्रन्थ विभागमें ग्रन्थ संकलित करनेकी सेवा भी कर रहे हैं । साथ ही आप 'महर्षि अध्यात्म विश्वविद्यालय'में 'आयुर्वेद' विषयपर शोधकर्ताके रूपमें भी सेवारत हैं ।

डॉ. जयंत आठवलेजीकी 'सच्चिदानंद परब्रह्म' उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

'१३.७.२०२२ से 'सप्तर्षि जीवनाडीपट्टिका'के वाचनके माध्यमसे सप्तर्षियोंकी आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको 'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले' सम्बोधित किया जा रहा है । इससे पहले उन्हें ग्रन्थोंमें 'प.पू.' एवं 'परात्पर गुरु' की उपाधियोंसे सम्बोधित किया है । इसके अनुसार ग्रन्थके मुखपृष्ठपर एवं ग्रन्थमें वैसा उल्लेख किया है ।

पाठकोंसे निवेदन !

'इस ग्रन्थमें सूक्ष्म परीक्षण, सूक्ष्म ज्ञानसम्बन्धी चित्र तथा 'पिप (पॉलीकॉन्ट्रास्ट इंटरफेरन्स फोटोग्राफी)' प्रणालीकी सहायतासे किया वैज्ञानिक परीक्षण 'महर्षि अध्यात्म विश्वविद्यालय'के सौजन्यसे दिया है ।' – **प्रकाशक**

अनुक्रमणिका

१. औषधीय वनस्पतियोंके रोपणसे पहले ध्यान देनेयोग्य सूत्र १०

२. गमलेमें पौधा कैसे लगाएं और उसकी देखभाल कैसे करें ? १०

३. भूमिके सन्दर्भमें ध्यान रखने योग्य कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्र १८

४. पौधा बनाने हेतु आवश्यक रोपवाटिका २३

५. जैविक खाद और कीटकनाशकोंके विविध विकल्प ३०

६. विविध आकारकी वनस्पतियोंका रोपण कैसे करें ? ३३

७. वनस्पतियोंके रोपण हेतु पुराने टायर्सका उपयोग ३६

८. औषधीय वनस्पतियोंसे मिलनेवाला उत्पाद निकालना व संग्रह करना ३७

९. औषधीय वनस्पतियोंका रोपण साधनाके रूपमें करें ! ४१

१०. सत्त्व, रज और तम, इन त्रिगुणोंका वनस्पतियोंपर होनेवाला परिणाम ४४

११. वनस्पतियोंको होनेवाली अनिष्ट शक्तियोंकी पीडापर आध्यात्मिक उपचार ५९

१२. रोपण हेतु उपयुक्त आध्यात्मिक यन्त्र ६२

१३. रोपण हेतु उपयुक्त कुछ टोटके ६९

१४. रोपण हेतु उपयुक्त मन्त्र-उपचार ७१

संस्कृत भाषानुरूप हिन्दीके प्रयोग हेतु सनातनका समर्थन !

हिन्दीमें उर्दूकी भांति कुछ शब्दोंके नीचे बिन्दु (नुक्ता) लगाते हैं, उदा. हज़ार, जोड़, गाढ़ा । संस्कृत देवभाषा है । सनातन संस्था उसे आदर्श मानकर, ग्रन्थोंमें शब्दोंके नीचे बिन्दु नहीं लगाती तथा कारकचिन्हको धातुसे जोडती है । संस्कृत समान हिन्दीका प्रयोग करना अर्थात 'चैतन्यकी ओर अग्रसर होना' । प्रत्येक व्यक्ति इसका आचरण कर 'स्वभाषा' रक्षार्थ अर्थात धर्मरक्षाके कार्यमें सहभागी होकर अपना धर्मकर्तव्य निभाए ! – **(सच्चिदानंद परब्रह्म) डॉ. आठवले**

भूमिका

खेती-बागवानीकी ही भांति औषधीय वनस्पतियोंका रोपण करनेके पूर्व भी मिट्टी, पानी, जलवायु आदि का विचार करना आवश्यक होता है । इसका विवेचन इस ग्रन्थमें किया है । औषधीय वनस्पतियोंके सर्वांगीण संवर्धन हेतु भौतिक स्तरके प्राकृतिक खाद एवं कीटनाशकोंके साथ ही आध्यात्मिक स्तरके यन्त्र, टोटके, मन्त्र आदि आध्यात्मिक उपचार भी आवश्यक होते हैं । इन दोनों स्तरोंका विवेचन, इस ग्रन्थकी विशेषता है । 'इस ग्रन्थके अध्ययनसे पाठक शास्त्रीय पद्धतिसे औषधीय वनस्पतियोंका रोपण कर पाएं', यह श्रीगुरुचरणोंमें प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**

ईश्वरीय संकल्पसे निर्मित तथा मानवका उद्धार करनेवाले सनातनके ग्रन्थ !

१. 'जो ज्ञान देते हैं, वे 'गुरु' हैं ! सनातनके ग्रन्थ पढकर मुझे इस वचनकी प्रतीति हुई कि 'ग्रन्थ ही गुरु हैं !'

२. 'ज्ञानगुरु' प.पू. डॉ. आठवलेजी द्वारा संकलित ग्रन्थ भी ज्ञानके भंडार हैं ।

३. श्रीमद्भगवद्गीता, महाभारत जैसे ग्रन्थ ईश्वरीय वाणीद्वारा साकार हुए; इसलिए वे चैतन्यदायी हैं । सनातनके ग्रन्थ भी ईश्वरीय संकल्पसे निर्मित हुए हैं । 'कलियुगके वेद' तुल्य ये ग्रन्थ चैतन्यके स्रोत हैं ।

४. सनातनकी चैतन्यमय ग्रन्थसम्पदाके कारण वास्तुमें सात्त्विकता निर्मित होती है तथा वास्तु शुद्ध होता है ।

५. सनातनके ग्रन्थोंमें दिए साधनासम्बन्धी मार्गदर्शनका आचरण कर पाठक क्रमानुसार 'साधक', 'अच्छा साधक', 'शिष्य' एवं 'सन्त' बन सकता है । इस प्रकार सनातनके ग्रन्थ मनुष्यका उद्धार करते हैं ।'

– पू. रमानंद गौडा, धर्मप्रचारक, सनातन संस्था, कर्नाटक. (२.९.२०२१)